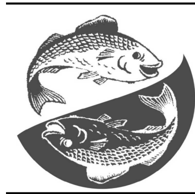
गीतांजलि

जगदीश प्रसाद मण्डल

गीतांजलि

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-72-3

दाम : १०० रू. मात्र

पहिल संस्करण : २०१२

गाम-पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी
मिथिला, बिहार
पिन- ८४७४१०
मोबाइल- ९९३१६५४७४२

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com
Printed at: Ajay Arts, Delhi-110002

Typeset by Sh. Umesh Mandal

Distributor :
Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 09572450405, 09931654742

<u>Gitanjali</u> : Anthology of Maithili Songs by Jagdish Prasad Mandal.

प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"
प्रोफेसर, *रवीन्द्र भवन, विश्व भारती,*
***शांति निकेतन* लेल**

अनुक्रम-

३१. अहीं कहू ……………………………………

३२. चलू उचितपुर ……………………………………

३३. कानि कलपि ……………………………………

३४. बुधिये बाट ……………………………………

३५. जुग-जुग ……………………………………

३६. घात लगौने ……………………………………

३७. देहसँ नमहर ……………………………………

३८. जिनगीमे जे ……………………………………

३९. हे बहिना केना ……………………………………

४०. हे आशुतोष ……………………………………

४१. मनक फूल ……………………………………

४२. फूल मनक ……………………………………

४३. बेकाल-काल ……………………………………

४४. जेहन जेकर ……………………………………

४५. समए-साल ……………………………………

४६. संग मान-समान ……………………………………

४७. जेहने शक्तिक ……………………………………

४८. खेल खेलौना ……………………………………

४९. प्रेमी पिया ……………………………………

५०. बिसरि गेल ……………………………………

५१. आबो कने ……………………………………

गीत- १

हाल-बेहाल देखि राग-रागनिक
कुशल फूल सजबैत रहै छै।
रंग चढ़ि करिया कारी
भ्रमर रस पान करैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि राग-रागनिक
कुशल फूल........।

डगडगाएल हाल पाबि उस्सरक
फूल उस्सर सिरजैत रहै छै।
घूरि ताकि नै भरमए भौरा
दिवा रसराज कहबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि राग-रागनिक
कुशल फूल........।

आसनसँ सिंघासन बनि-बनि
चटाइ नाओं धड़बैत रहै छै
पूजा आसन बनि सदए
लोक सुर सजबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि राग-रागनिक
कुशल फूल........।

उठि अंजलि चढ़ि मंजलि
मंगल गीत गबैत रहै छै।
हाल-बेहाल देखि राग-रागनिक
कुशल फूल........।

•

गीत- २

शीला शील देखि-देखि
हंस कानि कहैत एलैए।
एक शील श्रृंग चढ़ि-चढ़ि
दोसर श्रृंगार बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि........।

चढ़ि श्रृंग गढ़ि धनुखी
अकास सिर बेधैत एलैए।
हंसराज राजहंस रमकि
सिर श्रृंगार सजैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि.......।

शील सुशील सुर बदलि
तिरछित-मिरछित देखैत एलैए।
चिड़चिड़ाइत चिड़ै बूझि सुनि
सुशील-कुशील बनैत एलैए।
शीला शील देखि-देखि
हंस कानि.......।

•

गीत- ३

रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेहे सियाह घोराएल छै।
भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि
गीत प्रेम लिखाइत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेहे........।

गहराएल गहन पुनि चान जहिना
इजोत-अन्हार बनहाएल छै।
तहिना ने दिनो-दीनानाथ
भक-इजोत भऽ कनखिआइत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेहे........।

कहि रोशन टघरि सियाह
लेख कर्म लिखैत रहै छै।
तिले-तिल तिलकि जअ जहिना
हवन कुंड जरैत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेहे........।

भाव-अभाव कुभाव बनि-बनि
गीत प्रेम लिखाइत रहै छै।
रंग सियाही रोशनाइ बनि-बनि
रेहे-रेहे........।

-

गीत- ४

दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइ छै
साले दिनक समैये कते
लीलाक रंग बदलै छै
दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम……..।

अपन-अपन सनेस बाँटि सभ
सुरभित वायु परसै छै
खसल-पड़लमे जान फूकि
थाम्हि-थाम्हि उठबै छै
दिन घटतै आकि राति यौ भैया
मौसम……..।

समए ने ककरो संग पुड़ैए
ने ककरो संग दइ छै
अपन-अपन सभ समेटि-समेटि
सिरे-सिर उठबै छै
दिन घटतै कि राति यौ भैया
मौसम……..।

-

गीत- ५

उठिते आगि तनकि मन
मुक्का छाती मारि कहै छै,
ताल-ताल मिला बेताल
संग बाँहि आवाज भरै छै।
उठिते आगि तनकि मन
मुक्का........।

चढ़िते कातिक गाछी-बिरछी
गाम-गाम अखाड़ सुनाइ छै,
जाड़-हाड़ संग मिलि दुनू
जड़िआएल जाल तोड़ैत रहै छै।
उठिते आगि तनकि मन
मुक्का........।

सुषुम तेल तरहत्थी जहिना
बच्चा सिर धड़ैत रहै छै
धरिते तेल पकड़ि केश
अगिआइत आगि पाबैत रहै छै।
उठिते आगि तनकि मन,
मुक्का छाती मारि कहै छै।
ताल-ताल मिला बेताल
संग बाँहि आवाज भरै छै।
उठिते........।

•

गीत- ६

छानि किअए कुचड़ै छह हे कौआ
छान्हिर किअए बैसल छह।
लग-आबि समाद सुनाबह
नहिराक सोखरि गाबि सुनाबह
भैया-भौजीक हाल-चाल संग
गाम-समाजक हाल सुनाबह।
छानि किअए बैसल छह हे कौआ
छान्हिर........।

दादीक-दरदक हाल सुनाबह
बाबूक बात बिसरिहह नै
रेखिया-सुगिया पढ़ै छै कि नै
माइयक मन बिसरिहक नै
छानि किअए कुचड़ै छह हे कौआ
छान्हिर........।

•

गीत- ७

गामसँ किअए डरै छी
भाय यौ, गामसँ किअए डरै छी।
सदिकाल गामक चर्च करै छी
राति-दिन प्रशंसो करै छी।
तखन किअए भगै छी
गामसँ किअए डरै छी
भाय यौ........।

बाप-पुरुखाक पुरुषार्थ गाबि-गाबि
छाती-तानि हामी भरै छी
नानी-दादीक खिस्सा-पिहानी
सुना-सुना मोहैत रहै छी
गामसँ किअए डरै छी
भाय यौ........।

जइ मातृभूमि ममतासँ
हृदए गंग बहबै छी
गामे-गाम पसरल छै मिथिला
गामेसँ किअए मुरुछल छी,
गामसँ किअए मुरूछल छी
गामसँ किअए डरै छी
भाय यौ........।

•

गीत- ८

बेढब रूप गढ़ि-मढ़ि जिनगी
बेढब गीत गबै छै।
बेढब कुचालि सुचालि पकड़ि
बेढब पाठ पढ़ै छै।
बेढब गीत गबै छी
भाय यौ, बेढब........।

जीत जिनगी ठाढ़ छै जंगल
मंगल आस भरै छै।
कहि सुमंगल कुमंगल बनि
मंगल दंभ भरै छै
भाय यौ, मंगल........।
बेढब गीत गबै छै।

जहिना कार्बन कागज चढ़ि
कागज कार्बन कहबै छै।
तहिना कार्बन चढ़ि जिनगी
पक्ष अन्हार कहबै छै
भाय यौ, अन्हार........।
बेढब गीत गबै छै।

दोहरी पक्ष जिनगी चलै छै
अन्हार-इजोत कहबै छै।
दुख सागर बीच सुखसागर
अमवसिया पूर्णिमा कहबै छै
भाय यौ, अमवसिया........।
बेढब गीत गबै छै।

•

गीत- ९

संग जिनगी मन पान करै छै
समए संग रसपान करै छै।
संग जिनगी.......।

ठेँस-ठँसिया टूटि-फुटि जिनगी
हँसी-खुशी मुखपान करै छै
गुण-अवगुण भेद बिनु बुझने
समए संग रसपान करै छै।
जिनगी संग मन पान करै छै।
संग जिनगी.......।

झाड़-कुझाड़ कतौ नचै छै
कतौ ताड़ गाछ मलड़ै छै।
ठिठकि-ठिठकि ठमकि जिनगी
मति-मति सिर्जमान करै छै।
संग जिनगी.......।

अपन जिनगी अपने सन गढ़ि
दुखी-सुखी मुसकान भरै छै।
मोड़ि-मुँह उलटि-पलटि देखि
सुसकारी भरि-भरि चलै छै
संग जिनगी.......।

समए संग विषपान करै छै।
मान-अपमान भेद भूलि
संग मिलि सुरधाम चलै छै।
घाट-बाट अटकि-मटकि
हारि जीत स्नान करै छै
संग जिनगी.......।
समए संग रस पान करै छै।

•

गीत- १०

सबहक जिनगी गीत गबै छै
गीतक संग सुख-दुख कहै छै।
सबहक........।

सुर-तान, राग अलपि-अलपि
जिनगीक मुसकान भरै छै
सबहक........।

घड़ी-पहर रूप, बदलि भास
समए-संग संगीत रचै छै
सबहक........।

हँसि-विहुँसि सुर-तान तानि
विषम-सम बनबैत चलै छै
सबहक........।

अपन-अपन हक-हिस्सा जहिना
बीच बसुधा चान सुर्ज कहै छै
सबहक........।

चलि संग संगतिया रचि-रचि
काज-करतब सिखबैत चलै छै
सबहक........।
गीतक संग सुख-दुख कहै छै।

•

गीत- ११

सुन मैया गे, सुनू बाबू यौ
सुधि संतान सहरल केना
सुधि संतान सहरलै किअए?
कि दोख देखि दृग दूषित भेल
रहितो गुरु कहलौं ने किअए?
सुधि संतान सहरलै किअए?
सुधि संतान सहरलै केना?
सुन मैया........।

अधिया मानि जेकरा कहलिऐ
आधा मानि देलिऐ ने किअए?
सुधि परिवार बिसरलौं किअए
सुधि संतान........।

दुनू मिलि घर-दुआर सजेलौं
कुल-गोत्र दुनू संग मिलेलौं।
दोहरी रीति बनेलौं किअए?
सुनू बाबू यौ, सुनू भैया यौ
सुधि परिवार बिसरलौं किअए?
सुधि संतान........।

•

गीत- १२

पकड़ि तान सभक जिनगी
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ गढ़ि-गढ़ि, मढ़ि-मढ़ि
दिन-राति कहैत चलै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि........।

बदलि मीठ बिगड़ि-बिगड़ि
क्रोधे करुआए लगै छै।
कुदैत क्रोध तुरुचि तुष्टि
तीत-मीठ बनबए लगै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि........।

छनि-छनि, छन-छन पल-पल
राति-दिन गढ़ए लगै छै।
साँझ-भोर घड़ी-घंट बजा
कुथनी-कहनी कहए लगै छै
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि........।

शंख-नाद सुर मिला-मिला
नादशंख दिअए लगै छै।
कौरब-पाण्डव मध्य कृष्ण
महाभारत रचए लगै छै।
घड़ी परीक्षा दैत चलै छै।
पकड़ि........।

•

गीत- १३

भोरे कने जगा देब,
भाय यौ भोरे कने जगा देब।
जुग-जुगसँ मोट-गाढ़ नीन
सिरमा तरक सभ किछु लेलक।
आबो कने जगा देब,
भाय यौ आबो कने जगा देब।
भोरे........।

इन्दिरा अवासमे नाओं लिखेतै
सिमटी-ईटा केर घरो बनतै।
हथिया झटकी किछु ने करतै
भोरहरबे कने जगा देब
भाय यौ भोरहरबे कने जगा देब।
भोरे........।

सात कोस पएरे जए पड़तै
ब्लौकेमे शिविरो लगतै,
नाओं ओतै सेहो लिखेतै
भाय यौ, भोरे कने जगा देब।
भोरे........।

•

गीत- १४

पकड़ि पग पएरे-पएरे
पग-पग पथ पकड़ैत चलू।
पकड़ि प्रेम पहुँची पकड़ि
संग जिनगिक चलैत चलू।
पकड़ि........।

मोटरी-चोटरीक आशा कत्ते
हल्लुक जान बनबैत चलू
पथ अबिते-अबैत
गुरु स्मरण करैत चलू।
पकड़ि........।

जागल-सूतल धार बहै छै
जिन्दा मुरदा नाओं धड़ै छै
पथ-बना बीच धरती
जिनगीक गीत गबैत चलू।
पकड़ि........।

•

गीत- १५

संच-मंच रहए कहाँ दइए
यार यौ, संचमंच रहए कहाँ दइए
मकड़ी फड़ खुआ-खुआ
टीक पकड़ि खिंचैत रहैए
संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ........।

चिड़चिड़ी छीट-छीट कखनो
ओझरी टीक लगबैए।
पोझरी पकड़ि-पकड़ि
खेल नाच लगबैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ........।

कहियो रंग कहियो कादो
सभपर सभ फेकैए।
रंग-सियाही बदलि
आँखि दुइर करैए।
यार यौ, संच-मंच रहए कहाँ दइए।
भजार यौ........।

•

गीत- १६

ओस बनि आंसू पकड़ि
धार खून बहबैत एलैए।
प्रेम सिक्त प्रेमाश्रु पकड़ि
देह बेमाए कहबैत एलैए।
ओस बनि........।

हाथक हस्ति पकड़ि फाड़ि
रूप बेमाए धड़ैत एलैए।
बाँहि पकड़ि-पकड़ि हाथ
पएर पकड़ि कहैत एलैए।
ओस बनि........।

आंगुर पकड़ि पकड़ि छीनि
पएर सिर चढ़बैत एलैए।
हस्ति हाथ मेटा-मेटा
नाम पएर जपैत एलैए।
ओस बनि........।

•

गीत- १७

बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल,
मीत यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।

मुँह-दुआरि परदा दहा गेल
दहा गेल सभ कुटुम-परिवार
हित-अपेछित सेहो भसिया गेल
भसि गेल सभ आचार-विचार।
बाढ़िमे........।

मीत यौ, जिनगीक संग जिनगी हरा गेल।
गुल्ली डन्टा खेल दहा गेल
दहा गेल दुआर दुआरधार
चिन्ह पहचिन्ह सेहो दहा गेल
कखनी घुमतै दुआर-दुआरधार।
बाढ़िमे........।

कानि कलपि केकरा के कहबै
अपने बेथे सभ बेथाएल।
सुनत केकर के दुख नचारी
अपने मनमे सभ बौड़ाएल।
मीत यौ, सभ किछु दहा गेल
बाढ़िमे........।

•

गीत- १८

हरा-ढरा ढेरिआएल ढेरि
भोर-साँझ भुक्कैत रहै छी
हरा-ढरा ढेरिआएल ढेरि
भोर-साँझ........।

जइ सिरडीह नढ़िया भूकैत
राति-दिन गबिआइत रहै छी
हरा-ढरा ढेरिआएल ढेरि
भोर-साँझ........।

तान मारि कियो, कियो मारि ताइन
छिनकि-छिनकि छिड़िआइत चलै छी
हरा-ढरा ढेरिआएल ढेरि
भोर-साँझ........।

जोतल दौन कराम बीच
खेरहा-कुरथा दौन करै छी
हरा-ढरा ढेरिआएल ढेरि
भोर-साँझ........।

रसिक रसिया रस रचै छी
रसिक रसिया रस रचै छी।
हरा-ढरा ढेरिआएल ढेरि
भोर-साँझ........।

-

गीत- १९

मीत यौ हे यौ मीत
गहबर बीच गुहारि करै छी।

दिशा चारू फेकि फूल
शंख अकास फूकैत रहै छी
शंख अकास........।
मीत यौ, गहबर बीच गुहारि करै छी।

कूथि-कूथि सर सिरजि
व्यास बनि भगवत रचै छी
व्यास बनि........।
मीत यौ, हे यौ मीत
गहबर बीच गुहारि करै छी।

फूल एक अकास फेकि
दोसर गंगा लाभ करै छी
सखर-माँझ भेद नै बूझि
थरथराइत हाथ-पएर मरै छी
मीत यौ, हे यौ मीत
कुथनी कूथि मरैत रहै छी।
गहबर........।

-

गीत- २०

अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।
अजीब........।

राति-दिन कियो, कियो दिन-राति
एकबट-दुबट करैत रहै छै
अजीब-अजीब खेल चलै छै।
खाली-खाली मन भरै छै।

रातिक दिन कियो दिनक राति
विहुँसि-विहुँसि बढ़ैत रहै छै।
अजीब-अजीब खेल चलै छै।
खाली-खाली मन भरै छै।

काहू मगन कोइ, कोइ काहू मगन
रमि-रमि रमता बनैत रहै छै।
अजीब-अजीब खेल चलै छै
खाली-खाली मन भरै छै।

•

गीत- २१

अपने ताले नाच करै छी
गाले अपने गीत गबै छै।
अपने ताले........।

अपने हाल बेहाल भेल छी
अपने चालि चिचिआइत चलै छी
अपने ताले नाच करै छी
गाले अपने गीत गबै छी।

चलैत जिनगीक चक-चिकमे
मुनि आँखि भकुआइत चलै छी।
छिछलि-छिहलि बाट-घाट
दिनोदिन हराइत चलै छी।
अपने ताले नाच करै छी
गाल अपने गीत गबै छी।

हाल-गाल विकराल बनल छै
मुँहगर-मुँहगर बीच पड़ल छी
के केकरा देखि-सुनि चाहत
हारल-हराएल बौआइत चलै छी।
अपने ताले........।

•

गीत- २२

पग-पग उठैत पएर
सत रंग गीत गबैत चलैए।
कखनो आगू कखनो पाछू
उनटि-पुनटि देखैत चलैए
सतरंगी गीत गबैत चलैए।

आगू-पाछूक भेद बिनु बुझने
ससरि-ससरि ससरैत रहैए
जिनगीक शुक्ल-कृष्ण बीच
चीत-पट होइत चलैत रहैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।

कखनो विरह कखनो वसंत
भाव-विभोर गबैत चलैए।
वसंतक राग-तान, तानि
वेदना विरह बिखड़ैत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।

क्षण-पल जहिना दिन कहाबए
रातियो-राति रीतिआएल चलैए
कखनो दौड़, कखनो ठमकि
आशा-आश घिसिआइत चलैए
सतरंग गीत गबैत चलैए।

•

गीत- २३

यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु दहा गेल, सभ किछु दहा गेल।

मन दहा भसि-भसिया
लीढ़, केचली कादो समा गेल
यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु........।

बाल दहा जुआनी जुड़ि-जुड़ि
चित्त चेतन सेहो हरा गेल
यार यौ, बाढ़िमे सभ किछु दहा गेल।
सभ किछु........।

एक बाढ़ि धरती पसरि
दोसर अकास चढ़ै छै।
सिर, पएर ठेकान बिनु केने
अपनेमे दुनू लड़ै छै।
अचता मन पचि पचताए
अपनेमे समा गेल।
यार यौ, भजार यौ,
बाढ़िमे सभ किछु हरा गेल।
सभ किछु........।

•

गीत- २४

निरमोही बौआ, एना किअए रूसल छी।
बाबा-बाबी, बाप-माए कोर
संग-संग संगे खेलैत एलौं
दुनूक बनाओल डोरसँ
जुग-जुगसँ बन्हैत एलौं।
तखन किअए, छिटकै छी
एना किअए रूसल छी,
निरमोही बौआ........।

बानि छोड़ि कुबानि पकड़ि
वस्तु विन्यास बनबै छी
भ्रमित भ्रम पकड़ि-पकड़ि
भरमि-भरमि भरमै छी
निरमोही बौआ........।

भूल-चूक अपनो होइत अबैए
सोच-अपसोच संग चलैए।
साले-साल गीरह रक्षाक
तखन कअए छिटकै छी
निरमोही बौआ........।

•

गीत- २५

अपना गतिये सबहक जिनगी
पग परीक्षा दैत चलै छै।
तीत-मीठ सुआद सिरजि
राति-दिन कहैत चलै छै।
पग-पग परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिये........।

कखनो मीठ महकि-महकि
बिगड़ि तीत बनए लगै छै।
तहिना तीतो तड़पि-तड़पि
सुआद मीठ दिअए लगै छै।
पग-परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिये........।

पल-पल, छन-छन छनि-छनि
राति-दिन बनए लगै छै।
शंख संग नाद भरि-भरि
शंखनाद दिअए लगै छै।
पल-पल नाद भरए लगै छै।
पग-परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिये........।

कौरव-पाण्डव बीच जहिना
शंखनाद कृष्ण करै छै।
काया-माया बीच संसार
लट-पट, हट-सट
करए लगै छै।
पग-पग पएर, धड़ए लगै छै।
पग परीक्षा दैत चलै छै।
अपना गतिये........।

•

गीत- २६

मीत यौ, गृहनीक गारि सुनै छी
मीत यौ गृहनीक गप सुनै छी।
गाम-गाम आ गृह-गृहमे
गसल गीरह देखै छी
मीत यौ, अहींटा कहै छी
मीत यौ गृहनीक कथा कहै छी।
मीत यौ........।

गीरहक बीच गृही गुहाएल छै
गूह बीच जुट्टी समाएल छै
देखि-देखि चटिआइ छै,
मीत यौ, देखि-देखि चटिआइ छी
अहींटा कहै छी
मीत यौ........।

गृहपति सभ बनए चाहै छै
नै पाबि घुड़-मौड़ करै छै।
घुड़-मौड़सँ घुरिया घुरै छै
अहींटा कहै छी
मीत यौ........।

गृहनीक गारि सुनै छी
लाजे-धाक मरै छी, मीत यौ
अहींटा कहै छी
मीत यौ गृहनीक गारि सुनै छी
मीत यौ........।

•

गीत- २७

हे बहिना, हे बहिनी
जीवन संग जिनगी बदलै छै।

अपने बदलि किछु, किछु बदलैयो पड़ै छै
किछु अपने सुधरि, किछु सुधारैयो पड़ै छै।
जीवन संग जिनगी बदलै छै।
हे बहिना........।

संगे-संग मिलि खेललौं-धुपलौं
संग-संग रहि संगी कहलौं।
पकड़ि बाँहि बहिना कहेलौं
फूल-प्रीत बनि सासुर बसलौं
हलसि-हलसि मन हँसै छै
जीवन संग जिनगी बदलै छै
हे बहिना........।

एक बहिन ओद्रक कहबै छै
सहस्त्रो समाज गढ़ै छै।
बहिनासँ दीदी, दीदीसँ दादी
हँसि हँसि मन तड़पै छै।
हे बहिना, हे दिदगर
जीवन संग जिनगी चलै छै।
चलि-चलि रंग बदलै छै
जीवन संग जिनगी बदलै छै।
हे बहिना........।

•

गीत- २८

हे बहिना, हे दीदी, हे दादी
सुरति केना बदलतै।
हे बहिना........।

प्रीतिक रीति कुरीत बनल छै
रीति-सुरीति केना पेबै
थाल-खिचार घर-द्वार बनि
फल वृक्ष कल्प कहिया देखबै।
हे बहिना हे संगी, हे प्रेमी
सुरति केना बदलतै
हे बहिना........।

जहिना जहर तहिना फुफकार
नाग, गहुमन डॅसैत रहै छै।
करम-भाग मनतर जपि-जपि
अगुआ-पछुआ धरैत रहै छै।
हे प्रीतिया हे रीतिया
नीक फल कहिया देखबै
हे नीक फल कहिया देखबै।
हे बहिना........।

•

गीत- २९

सुक्खक अतृप्त धारमे
भसिया गेलै जीवन।
भसैत-भसैत भसिया गेलै
कान्हि-कलपि कहैए मन।
सुक्खक अतृप्त धारमे
भसिया........।

कि सोइच सोचै छलै
पेतै मन आनन्द
बिना आन्नदे मिलतै केना
ब्रह्मानन्दमे आनन्द।
सुक्खक अतृप्त धारमे
भसिया........।

धारक अंतिम धारामे
बँचतै केना के जीवन।
सुक्खक अंतिम धारमे
भसिया........।

•

गीत- ३०

नढ़ड़ा हेल हेलै छी, भाय यौ
नढ़ड़ा हेल हेलै छी।
ठकि-ठकि, फुसिया-पनिया
जिनगी संग खेलै छी, भाय यौ
जिनगी संग खेलै छी
नढ़ड़ा हेल.......।

जुग छल जमाना छल
कलपि कूश लागै छल
सोझ-साझ फुलका-फलका
चालि खिखिर बनल छल।
सुख स्मृति पाबैत रहै छी
नढ़ड़ा खेल खेलैत रहै छी।
नढ़ड़ा हेल.......।

नढ़ड़ा जहिना गाछ उगै छै
भकराड़ चालि पकड़ि चलै छै।
फड़-फूल बिनु रूप गढ़ि-गढ़ि
नढ़ड़ा फल देखबैत रहै छै।
देखि-देखि अलिसाएल रहै छी
नढ़ड़ा हेल.......।

नढ़ड़ा खेल खेलैत रहै छी।
भाय यौ, नढ़ड़ा हेल हेलैत रहै छी।
नढ़ड़ा हेल.......।

•

गीत- ३१

अहीं कहू भाय आब की करबै?
पएर पसारब तखने
मन समेटब जखने
शिव दर्शन कैलाशक ऊपर
भट्ठा नै शिरापर
तहन जे धारक लहरिमे हेलबै
अहीं कहू भाय आब की करबै?

दहिना हाथक गति बामा अछि
आगू चलि कऽ देखियौ
मुदा, पाछूओ भेने भाय
ओ बाट नै छोड़त
की प्रकृति प्रदूषण करबै?
अहीं कहू भाय आब की करबै?

नमहर-नमहर पर्चा-पोस्टर
बाँटि-बाँटि भरमेबै,
बिर्ड़ो, दानो, ठनकाक दुर्गकेँ
जेरक-जेर केना कऽ टपबै?
अहीं कहू भाय आब की करबै?

नमहर-नमहर बात बना
सुखले आँखिक नोर बहा
जहर लगल हाथ केना पोछबै?
अहीं कहू भाय आब की करबै?

•

गीत- ३२

चलू उचितपुर देस
यौ-भैया चलू उचितपुर देस।

नै अछि भेदभाव ओतए किछु,
नै अछि चोर-बैमान।
नै अछि छोट-पैघक अंतर,
सबहक एक्के भेस,
सबहक चालि-ढालि एक्के अछि,
सबहक मान-समान।
चलू.......।

आगि-पान्कि भेद कोनो नै,
सबहक एक्के देस।
यौ भैया........।
पढ़ै-लिखैक एक्के रस्ता अछि,
सबहक एक्के उदेस।
चलू.......।

जिनगीक तँ एक्के विचार अछि
नै अछि देस-विदेस।
यौ भैया........।
माए-बहिन सबहक एक्के छी,
बाल-बच्चा सभ एक।
चलू.......।

एक्के खाहिंस सभकेँ होइ छै
ने कम ने बिसेस।
यौ-भैया चलू उचितपुर देस।
चलू.......।

•

गीत- ३३

कानि कलपि कते कहब
गामेमे हराएल छी
रंग-बिरंगक अन्न-पानिमे
नीकसँ छिड़िआएल छी
कानि-कलपि........।

समटेनौं तँ ने समटाइए
थाकि कऽ ठकुआएल छी
डरे आँखियो ने उठैए
कातेमे नुकाएल छी।
गामे........।

जइ आशा ले जीबै छी
तइपर पानि फेराएल छै
तैयो आशक डोर पकड़ि
पाछू-पाछू घिसिआएल छी।
कानि-कलपि........।

•

गीत- ३४

बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये बाट बौरेलौं हे।
बुधिये........।

आड़ि-धूड छेकने छै धरती
नै छेकने अकास हे
उड़िते उड़ि ओतए उड़ि गेलौं
कहाँ भेटए रणवास हे
बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये........।

देस-दुनियाँक रंग-रूप देखि
अपनो रूप न्खिारितौं हे
अगम-अथाह पड़ल हे बहिना
जिबैक नै विश्वास हे
बुधिये बाट बौएलौं हे बहिना
बुधिये........।

•

गंगा वंदना

जुग-जुग आस लगौने मइये
शीत-रौद चटैत एलौं
लुप्त भेल नयन-ज्योति।
हे मइये,
रेगहा टा जपैत एलौं।

गंगाजलिसँ नीर बोझि
सिक्त करब दसो दुआरि।
आंगन-घरक संग-संग
नीपब गोसौन्कि चौपाड़ि।
हे मइये........।

हँसैत, गबैत, नचैत, भसैत
पहुँचब तोर दुआर
मुदा फँसि मकड़जालमे
बन्न भेल सभ केवाड़।
हे मइये........।

दसो दिशा अछि घेराएल
अकास बहैत देखै छी
मुदा ससरि गेल भूमा
कान्हि-कानि गबै छी।
हे मइये........।

•

(श्री राजनन्दन लाल दासक अठहतरीम जन्म दिनपर...)

गीत- ३६

घात लगौने घात लगल छै
फल करनी अवघात मढ़ल छै
घात लगौने घात लगल छै
करनी फल अवघात मढल छै।
घात लगौने घात लगल छै
फल........।

तिनकमिया बंशी बनि-बनि
पानि बीच घतिया पड़ल छै।
गंध बोर सुगंध कहि-कहि
मुँह मध्य अवघात करै छै।
घात लगौने घात लगल छै।
फल........।

बिनु अवघाते होइत रहै छै
गलफड़ घात लगैत रहै छै।
ही-जी छिछिया-छिनिया
उनटि-सुनटि सुनगैत रहै छै।
घात लगौने घात लगल छै।
फल........।

•

गीत- ३७

देहसँ नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूर वएह कूदि टपै छै।
टपि टपान हाथो कहैत
राही राह पकड़ि चलै छै।
देहसँ नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूड........।

टाँग जेकर हाथी सदृश
बालु ऊँट कहाँ बुझै छै
चालि सुचालि पकड़ि-पएर
रच्छा अपन करैत रहै छै।
देहसँ नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूड........।

मुसुक मन मारि मुस्की
मने-मन मुसकान भरै छै।
हहा-हहा हषविष अबैत
कूदि-फानि कहैत रहै छै।
देहसँ नमहर टाँग जेकर
आड़ि-धूड........।

•

गीत- ३८

जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह कहबैत रहैए।
संग ससरि, घुसकि-पुसकि
प्रेमी मित्र कहबैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह........।

मित्र बनि मैत्रेयी पकड़ि
जिनगीक झूल झूलैत रहैए
लेख-जोख कर्मक करैत
गुण गुण मन गुणैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह........।

संगी, प्रेमी दोस्त भजार
बैसि बाट बतिआइत रहैए।
संग-कुसंग, कुसंग-संग
नीड़ नोर निनिआइत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह........।

संग ससरि घुसकि-पुसकि
प्रेमी मित्र कहबैत रहैए।
जिनगीमे जे संग पूड़ैए
संगी वएह........।

•

गीत- ३९

हे बहिना केना कऽ जेबइ ओइ घरबा
थुक फेकि जइ घर निकललौं
केना जेबइ ओइ दुअरबा हे बहिना
केना कऽ जेबइ ओइ घरबा
थुक फेकि........।

जनि-जनि बीआ वाणी-बानि
लतरै-चतरै छै फुलबतबा
सुबास-कुबास बनि-बनि
सभ किछु देलिऐ गमबा
हे बहिना केना कऽ जेबइ ओइ घरबा
थुक फेकि........।

पुरुखपात रहलै ने एक्को
करतै के बगबटबा
घरहरिया एको ने बॅचलै
बन्हतै के घरमरबा
हे बहिना केना कऽ जेबइ ओइ घरबा।
थुक फेकि........।

•

आरती-

हे आशुतोष भगवान अहाँ,
हमर कखन दुख मेटब
हे आशुतोष........।

बहति-बहति अश्रुभूमि सूखि गेल
कि लए आरती उतारब।
कनैत-कनैत कनन्मुँह मौला गेल
सुआगत कि लए अहाँ करब?
हे आशुतोष........।

सभ दिन दुखक तर दबेलौं
सुखक सुख कहियो ने पेलौं।
चुहटि हृदए तोष पकड़ि
मनुखक गति कहियो ने पेलौं।
हे आशुतोष........।

सुसुकि-सुसुकि हृदए हमर
बेथा अपन सुनबैए।
अन्तो अन्त उतारि आरती
सिहरि-सिहरि सुनबैए।
हे आशुतोष........।

धीर होइत धीरज मेटा गेल
थीर होइत विवेक थकुचा गेल।
झड़कि-झड़कि ज्ञान झड़कि
पड़ले-पड़ल सभ सड़ि गेल।
हे आशुतोष........।

•

गीत- ४१

मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे फूल फुलाइत रहै छै
भोरहरबे वसन्त जहिना
मेघ ललौन बनैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे........।

पकड़ि उष्म सिरजि लाली
राग वसन्त गबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे........।

रीत-सुरीत फूल-फुलकि-फलकि
फूल-फल मिलबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे........।

जोड़ि-जाड़ि मसुआ-छिड़िया
बरहमसिया कहबैत चलै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे........।

मार टॉहि अलप-अलपि
बारहो मास चलैत रहै छै।
मनक फूल फुलाइत रहै छै
मनमे........।

•

गीत- ४२

फूल मनक फुलाइ केहेन छै
मनमे फूल फुलाइ केहेन छै।
जेहेन जेकर मन रहै छै
तेहेन मन फूल धड़ै छै।
फूल मनक........।

जेहेन जेकर फूल सजै छै
तेहेन तेकर फुलवाड़ी लगै छै।
फूल मनक........।

फूलोक तँ भिन-भिन किरदानी
तीत-मीठ बिखड़ैत रहै छै।
तीतमिट्ठी बनि-बनि बिलहि
खून-पानि मिलबैत चलै छै।
फूल मनक........।

•

गीत- ४३

बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
समसमाइत घुसुकैत रहै छै।
जेहन जेकर फूल रहै छै
कोढ़ी-वाती तेहने बनै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत........।

कोढ़िक कोढ़िपना नहि-नहि
रूपक रूपगामिनी रहै छै।
ससरि-सड़कि बदलि रूप
फूल कखनो बाती बनबए लगै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत........।

कालोक कि कम अछि किरदानी
अकाल-सकाल बनबैत रहै छै।
सूति-जागि सभ चलि-चलि
गाल-काल बनबैत रहै छै।
गाल-काल बनबैत रहै छै।
बेकाल-काल कुहुकैत रहै छै।
समसमाइत........।

•

गीत- ४४

जेहेन जेकर बगए रहै छै
तेहेन तेकर वाणि चलै छै।
जेहेन जेकर बाइन चलै छै
तेहेन तेकर बौस बनै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

एक बाइन बाँसक चलै छै
दोसर व्योंत-बेति-बेति होइ छै।
तेसर सिक्की सिक चढ़ै छै।
डाला-डाल सुसकारी भरै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै।
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

कखनो बानि उबानि चलि-चलि
कुबानि-सुबानि कहबैत चलै छै।
जेहेन जेकर वगए रहै छै
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।
तेहेन तेकर बाइन चलै छै।

•

गीत- ४५

समए-साल सुसकारि चलै छै
समसमाइत-घमघमाइत रहै छै।
जेहन जेकर फूल रहै छै
कोढ़ी-वाती एक करै छै
समए-साल........।

कोढ़िक कोढ़िपना नहि-नहि
रूपक रूपगामिनी छै।
कोढ़िक संग पकड़ि-पकड़ि
वाती-फूल सिरजैत चलै छै।
समए-साल........।

सालोक कि कम शैतानी
सुसमए-कुसमए बनबए लगै छै
जगता जोर पकड़ि-पकड़ि
गजगामिनी रूप धड़ए लगै छै।
गजगामिनी बनि चलए लगै छै।
समए-साल........।

•

गीत- ४६

संग मान-समान चलै छै
मीत यौ, मान्कि संग सम्मान चलै छै।
असगर जहिना फूसि वृहस्पति
मानो तहिना घटै-बढ़ै छै
एक नमरी दू नमरी बनि-बनि
किरदानी सभ करैत रहै छै।
किरदानी सभ करैत रहै छै।
मीत यौ........।

अमान-मान बनि-बिगड़ि
कुमान खेल खेलैत रहै छै
छीन-झपटि सुमन श्रृंग
रीत श्रृंगार सजैत रहै छै।
रीत श्रृंगार सजैत रहै छै।
मीत यौ........।

जुग-जुगसँ ससरि-पसरि
अगो सिर चढ़ैत रहै छै।
जोग-अजोग कहि-सुनि
दुंदुभि बजबैत रहै छै।
दुंदुभि बजबैत रहै छै।
मीत यौ........।

•

गीत- ४७

जेहने शक्तिक रंग रहै छै,
पकिया रंग तेहने धड़ै छै।
जेहने........।

जेहन पकिया रंग रहै छै,
देव सिर तेहने चढ़ै छै।
जेहने शक्तिक रंग रहै छै,
पकिया रंग तेहने चढ़ै छै।

दुनियाँक भँवर जाल बीच,
मित्र-इष्ट बिड़ले भेटै छै
अशिष्ट, इष्ट, जालमे
सोझर ओझर होइत चलै छै
जेहने शक्तिक रंग रहै छै
लीलाक तेहने दृष्य बनै छै।
लीलाक........।

•

गीत- ४८

खेल खेलौना खेल खेलै छी
मने-मन बपहारि कटै छी।

खेल खेलौना खेल खेलै छी।
एक खेलौना छी मन रंजन
दोसर जीवन धार बहाबए
कदम डारि झुलि झूला
जमुना धार महार कहाबए।
खेल खेलौंना........।

नै हँसि कानि नै पाबि
मन-मरदन करैत रहै छी
खेल खेलौना खेल देखै छी
मने-मन बपहारि कटै छी।

•

गीत- ४९

प्रेमी पिया, हे प्रेमी पिया
पीरितिया जोगा-जोगा, हृदए रखियौ जीया
हे यौ प्रेमी पिया........।

तड़सि-तड़सि मन तड़पि रहल अछि
आस लगा बाट खोजि रहल अछि
नजरि उठा आबो कने, तकियो हिया
हे यौ प्रेमी पिया........।

चीन्ह पहचीन्ह सभ, सेहो उड़िया गेल
हवा झोंक पाबि सभ छिड़िया गेल
आबो कने नजरि उठा, दिअ हमरो जिया
हे यौ प्रेमी पिया........।

सभ दिन संगे मिलि दुनू रहलौं,
सुख-दुख सेहो संगे मिलि कटलौं।
छाती खोलि सहेजि-सहेजि,
दिल दिलेरि धरू पिया
हे यौ प्रेमी पिया........।

•

गीत- ५०

बिसरि गेल मन तोरा
हे बहिना बिसरि गेल मन तोरा
जहिना गाछक फूल झड़ै छै
झाड़ि-झाड़ि खसलह तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।

रहि-रहि सुमारक अबै छै
देखैले हृदए तड़सै छै
मारि-सम्हारि गबै छह तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।

खोद-बेद सदि करैत रहै छह
तोरा-पाछू घुमैत रहै छह
लपकि-झपकि पाबए चाहै छह
झपटि पकड़ि वॉहि तोरा
हे बहिना, बिसरि गेल मन तोरा।

कोसी-कमला दूर भगौलक
नैहर-सासुर सेहो बिसरौलक।
हहरि-हहरि हृदए सहटि
छाती सटबए चाहैए तोरा
हे बहिना........।

•

गीत- ५१

आबो कने विचारू
भाय यौ, आबो कने विचारू।
भूखे भगलौं, सभ जनैए
दुखे भगलौं, सभ जनैए।
भरल पेट विचारू,
आबो कने विचारू
भाय यौ........।

जहिया जे भेल, से तहिया भेल
भूत गेल, भूतकालो गेल।
वर्त्तमानक कथा-बेथा संग
विचारू, आबो भविष्यक लेल।
आबो कने विचारू
भाय यौ........।

कमा-खटा कऽ दुख मेटेलौं
भूख-पियास सेहो, भगेलौं।
जरल मन भरि पोख भरलौं
आबो कने विचारू
भाय यौ........।

•

जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म ५ जुलाइ १९४७। गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (दीर्घकथा संग्रह-शंभुदास; लघुकथा संग्रह १.गामक जिनगी, २. अर्द्धांगिनी..सरोजनी.. सुभद्रा.. भाइक सिनेह इत्यादि; आ तरेगन -बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह); नाटककार (१.मिथिलाक बेटी, २.कम्प्रोमाइज, ३.झमेलिया वियाह आ ४.एकांकी-संचयन); उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत) आ कवि (१.इन्द्रधनुषी अकास, २.गीतांजलि आ ३.राति-दिन)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। गामक जिनगी, लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ क मूल पुरस्कार, आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; आ बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल बाल साहित्यक विदेह सम्मान २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।
